भविष्यवाणी संबंधी अधिकार और प्रासंगिकता



पाठ 10 दिसंबर 05, 2026 के लिए

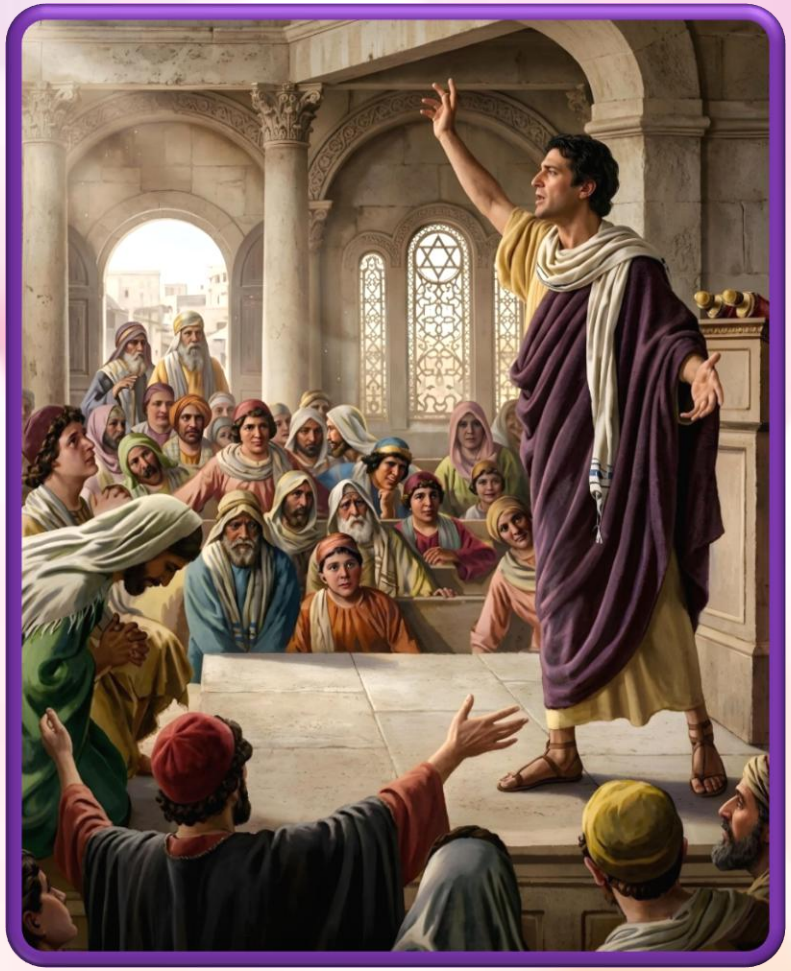
हिंदी अनुवादक: पादरी विजय पाल सिंह


“क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी
बहुत चोखा है; और प्राण और आत्मा को, और गाँठ–गाँठ और गूदे–गूदे को अलग
करके आर–पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है”
(इब्रानियों 4:12)

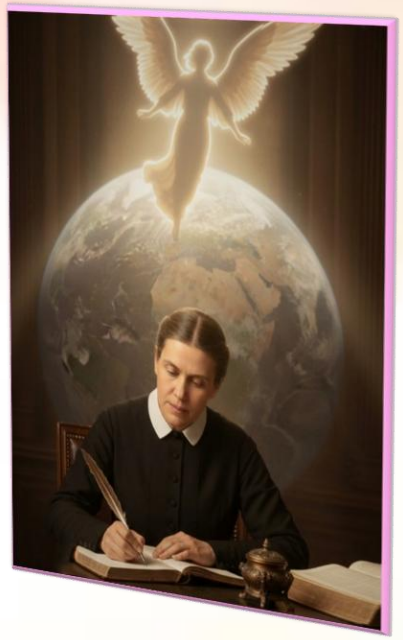
पूरे इतिहास में परमेश्वर के लोगों के विकास और उन्नति में भविष्यद्वक्ताओं की जो भूमिका रही है, उसकी महत्ता पर कोई संदेह नहीं है।

उन्हें ईश्वरीय अधिकार दिया गया था, ताकि वे इस्राएल के लोगों के मार्ग को सीधा कर सकें और बाद में, कलीसिया की स्थापना के आरंभिक समय में उसके विकास का मार्गदर्शन कर सकें।





क्या प्राचीन समय के भविष्यद्वक्ताओं का सन्देश आज भी प्रासंगिक है? क्या इन अंतिम दिनों में कलीसिया को मार्गदर्शन देने के लिए नए भविष्यद्वक्ताओं की आवश्यकता है?



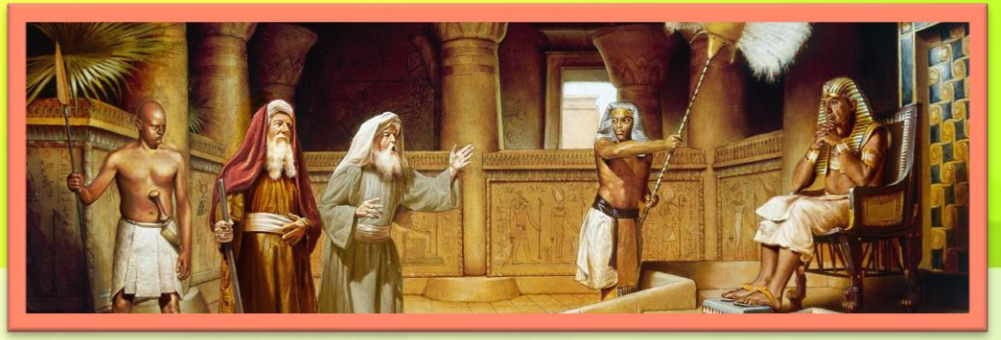
- अधिकार का स्रोत:
  - ईश्वरीय अधिकार
  - यीशु का अधिकार
  - बाइबल का अधिकार
- भविष्यद्वक्ताओं की प्रासंगिकता:
  - कलीसिया में उनकी प्रासंगिकता
  - गैर-बाइबलीय भविष्यद्वक्ताओं की प्रासंगिकता

अधिकार का स्रोत



ईश्वरीय अधिकार

"वह तेरी ओर से लोगों से बातें किया करेगा; वह तेरे लिये मुँह और तू उसके लिये परमेश्वर ठहरेगा" (निर्गमन 4:16)





अपने प्रारंभिक वर्षों में, मूसा को उसकी माता ने परमेश्वर के मार्गों की शिक्षा दी (निर्गमन 2:8-10)।



40 वर्ष की आयु तक, उसने फिरौन के महल में सांस्कृतिक, राजनीतिक और सैन्य शिक्षा प्राप्त की।



इसके बाद उसने अगले 40 वर्ष जंगल में बिताए, जहाँ उसने चरवाहे के साधारण जीवन के वातावरण में परमेश्वर से शिक्षा प्राप्त की।



जब परमेश्वर ने समझा कि मूसा तैयार है, तब उसने उसे इस्राएल और फिरौन से बात करने के लिए एक भविष्यद्वक्ता के रूप में भेजा (निर्गमन 3:1-2, 10)।

चूँकि मूसा को लगा कि वह उनसे सीधे बात करने में सक्षम नहीं है, इसलिए परमेश्वर ने हारून को उसका "भविष्यद्वक्ता" नियुक्त किया (निर्गमन 4:14-16)। यह इस बात का एक उदाहरण है कि परमेश्वर का प्रकाशन भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से किस प्रकार कार्य करता है:

मूसा	हारून से बात करता है	हारून लोगों तक सन्देश पहुँचाता है
परमेश्वर	भविष्यद्वक्ता से बात करता है	भविष्यद्वक्ता लोगों तक सन्देश पहुँचाता है

सन्देश को अधिकार किसने दिया, मूसा ने या हारून ने?

सन्देश को अधिकार कौन देता है, परमेश्वर या भविष्यद्वक्ता?

यीशु का अधिकार

"वे उस के उपदेश से चकित हो गए क्योंकि उसका वचन अधिकार सहित था" (लूका 4:32)

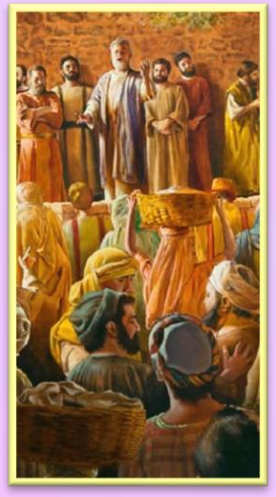


हर कोई यह मानता था कि यीशु अधिकार के साथ बोलता था, यहाँ तक कि उसके शत्रु भी (लूका 4:32)। जब उन्होंने उसे फँसाने के प्रयास में उससे पूछा कि उसे यह अधिकार किसने दिया है, तो उसने उत्तर देने से इनकार कर दिया (मत्ती 21:23-27)।

लेकिन हम इसका उत्तर जानते हैं। यीशु को सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता होने के नाते अधिकार प्राप्त है (यूहन्ना 1:3; रोमियों 3:24)।

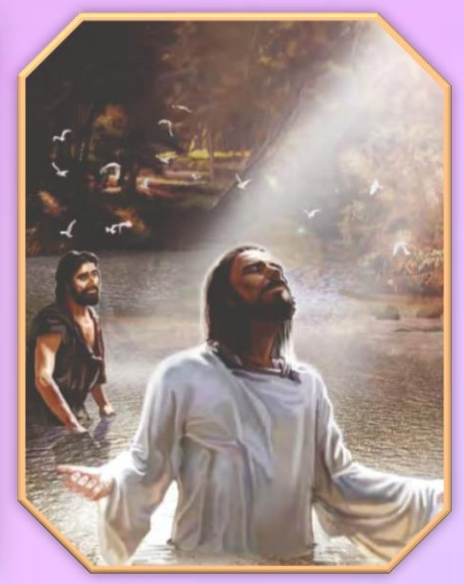
हालाँकि, अपनी सेवकाई के दौरान उसने जिस अधिकार को प्रकट किया, वह सीधे पिता से आया था (यूहन्ना 17:1-2)।

यीशु के अधिकार में कौन-कौन सी बातें शामिल थीं, जिनमें से कुछ अधिकार उसने अपने शिष्यों को भी दिए थे?



- शिक्षा देना (लूका 4:32)
- पापों को क्षमा करना (मरकुस 2:10-11)
- दुष्टात्माओं को निकालना (लूका 4:36)
- दूसरों के विचारों को जानना (यूहन्ना 2:24-25)
- न्याय करना (यूहन्ना 5:27)
- अनन्त जीवन देना (यूहन्ना 17:2)





बाइबल का अधिकार

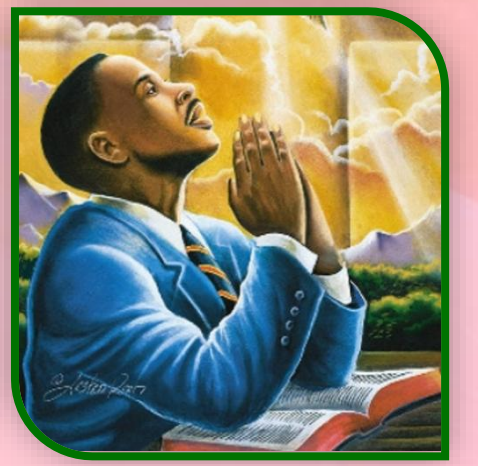
"परमेश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है" (नीतिवचन 30:5ए,)

परमेश्वर के वचन के रूप में, जो उसके भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से हम तक पहुँचाया गया है, बाइबल परमेश्वर के समस्त अधिकार से युक्त है।

- यह हमें बताती है कि हम कहाँ से आए हैं और हमें कहाँ जाना है।
- यह वह माध्यम है जिसका उपयोग परमेश्वर हमसे संवाद करने के लिए करता है।
- यह हम पर परमेश्वर के चरित्र और उसकी इच्छा को प्रकट करती है।
- यह हमें हमारे जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य की शिक्षा देती है।
- इसमें सत्य समाया हुआ है।
- यह सही निर्णय लेने में हमारी सहायता करती है।
- यह मसीही विश्वदृष्टिकोण का आधार है।
- यह विश्वास का वह नियम है जिस पर सारी शिक्षाएँ आधारित हैं।







बाइबल को उसका उपहास करने, उसमें त्रुटियाँ खोजने, उसमें वैज्ञानिक कठोरता की कमी ढूँढ़ने या उसे अपने विचारों के अनुरूप बनाने के प्रयास से पढ़ने का परिणाम भी वही होगा, जो उसे अनदेखा करने, उसके लिए समय न निकालने या उसकी शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू न करने का होगा: अनन्त जीवन की हानि।

लेकिन हममें से जो उसके सन्देश को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, उनके लिए उसमें हमारे हृदयों को बदलने और हमें अनन्त जीवन देने की सामर्थ्य है (इब्रानियों 4:12; 1 पतरस 1:23-25)।

भविष्यद्वक्ताओं की प्रासंगिकता



कलीसिया में उनकी प्रासंगिकता

"एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा यहोवा इस्राएल को मिस्र से निकाल ले आया, और भविष्यद्वक्ता ही के द्वारा उसकी रक्षा हुई।" (होशे 12:13)







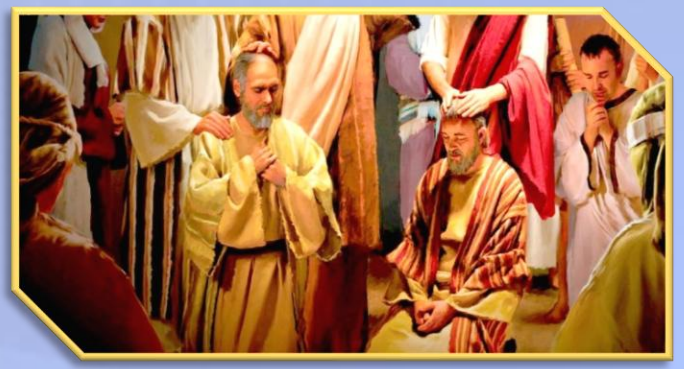


होशे ने मूसा को दिए गए भविष्यद्वाणी के वरदान की भूमिका पर प्रकाश डाला है (होशे 12:13)। इस वरदान के कारण ही वह इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाल सका, कनान की यात्रा में उनका मार्गदर्शन कर सका, उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान कर सका और लोगों को राजनीतिक तथा धार्मिक रूप से संगठित कर सका।

मूसा के बाद, दबोरा और यहजीएल जैसे भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से परमेश्वर इस्राएल का मार्गदर्शन करने, उसकी समस्याओं का समाधान करने और उसे राजनीतिक तथा धार्मिक रूप से संगठित करने के लिए भविष्यद्वाणी के वरदान का उपयोग करता रहा। उदाहरण के लिए, एलीशा ने एक सैन्य अभियान में हस्तक्षेप किया और इस्राएल तथा अराम के बीच शांति स्थापित की।

नए नियम के समय में भी, कलीसिया के संगठन और विकास में भविष्यद्वक्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (प्रेरितों के काम 13:1-3)।

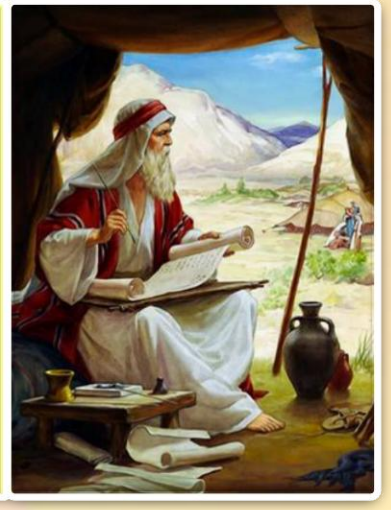
परमेश्वर इन अंतिम दिनों में अपनी कलीसिया का मार्गदर्शन करने के लिए आज भी भविष्यद्वाणी के वरदान का उपयोग करता है।





गैर-बाइबलीय भविष्यद्वक्ताओं की प्रासंगिकता

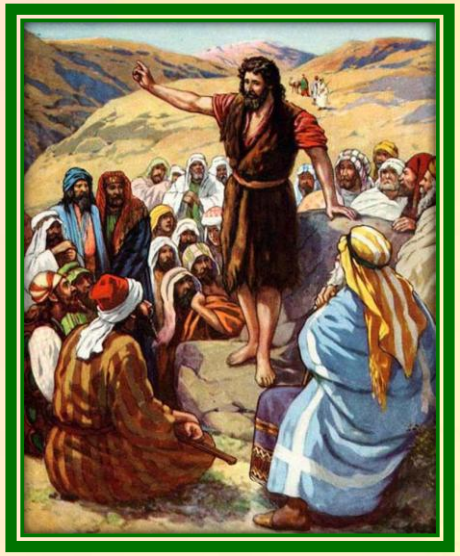
"आदि से अन्त तक सुलैमान के और सब काम क्या नातान नबी की पुस्तक में, और शीलोवासी अहिय्याह की नबूवत की पुस्तक में, और नबात के पुत्र यारोबाम के विषय इद्दो दर्शी के दर्शन की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?" (2 इतिहास 9:29)





बाइबलीय भविष्यद्वक्ता वह है जिसने बाइबल की कोई पुस्तक लिखी हो (जैसे मूसा)। इनके विपरीत, गैर-बाइबलीय भविष्यद्वक्ताओं के सन्देशों के बारे में हमें केवल तभी जानकारी मिलती है, जब उनके वचनों को दूसरों ने लिखकर सुरक्षित रखा हो। इनमें से कुछ भविष्यद्वक्ताओं ने भी पुस्तकें लिखीं, लेकिन उन्हें बाइबल के धर्मग्रंथों के संग्रह में शामिल नहीं किया गया (2 इतिहास 9:29)।

फिर भी, गैर-बाइबलीय भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से पहुँचाए गए परमेश्वर के सन्देश का अधिकार और उसकी प्रासंगिकता बाइबलीय भविष्यद्वक्ताओं के सन्देश के समान ही है (लूका 7:28 के अनुसार, भविष्यद्वक्ताओं में सबसे महान व्यक्ति बाइबलीय भविष्यद्वक्ता नहीं था)।





बाइबल बताती है कि मसीह के लौटने तक भविष्यद्वक्ता होते रहेंगे (योएल 2:28-32; इफिसियों 4:11-16)। ये भविष्यद्वक्ता कभी भी बाइबल के धर्मग्रंथों के संग्रह का हिस्सा नहीं बन सकते, क्योंकि बाइबल का धर्मग्रंथ-संग्रह पहले ही पूरा हो चुका है। लेकिन इससे उनका अधिकार कम नहीं हो जाता।

“कुलपिताओं, भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से बातें कीं और उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वे अपनी शक्ति से या अपने नाम से नहीं बोलते थे। वे नहीं चाहते थे कि कोई श्रेय उन्हें दिया जाए या कोई उन्हें ऐसी किसी बात का आरंभकर्ता समझे, जिसके लिए वे घमंड कर सकें। वे परमेश्वर के सम्मान के प्रति सजग थे, क्योंकि सारी स्तुति उसी की है। उन्होंने घोषणा की कि उनकी योग्यता और उनके द्वारा दिए गए सन्देश उन्हें परमेश्वर की शक्ति के प्रतिनिधियों के रूप में सौंपे गए थे। परमेश्वर ही उनका अधिकार और सामर्थ्य का स्रोत था।”

ई जी व्हाइट (यीशु के समान बनें, 30 जुलाई)

परिशिष्ट: एलेन जी. व्हाइट के अधिकार और प्रासंगिकता



एलेन जी. व्हाइट को बाइबल के बाद के समय के और बाइबल के धर्मग्रंथों में शामिल न किए गए भविष्यवक्ताओं के समूह में रखा जाता है। उनसे पहले हुए अन्य भविष्यवक्ताओं की तरह, उनका अधिकार परमेश्वर से आता है और बाइबल के अधिकार के अधीन है।

बाइबल के कुछ विषयों (उदाहरण के लिए, अच्छाई और बुराई के बीच संघर्ष) को विस्तार से समझाने के साथ-साथ, उनका संदेश उन मुद्दों से भी संबंधित है जो हमारे समय के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक हैं (कलीसिया और राज्य के बीच गठबंधन का खतरा, पशु की छाप, शिक्षा और स्वास्थ्य)।





उनकी लेखनी ने अनेक लोगों को अपनी जीवनशैली बदलने और इस प्रकार बेहतर जीवन का अनुभव करने में सहायता की है।

यद्यपि एलेन जी. व्हाइट की लेखनी बाइबल में शामिल नहीं है, फिर भी परमेश्वर ने पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में रहने वाले विश्वासियों का मार्गदर्शन करने के लिए उनका उपयोग किया है।

